



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

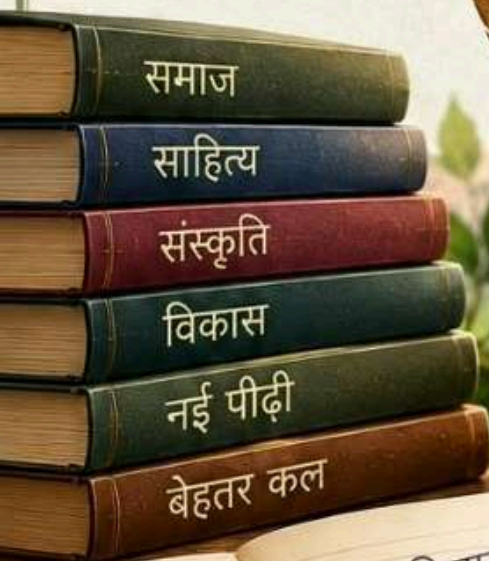
शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)



विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-

जीवनलाल साह पंतनगर

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

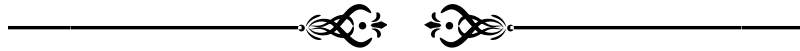
विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - जीवनलाल साह पंतनगर

वर्तमान में बहुत सी नई नई समस्याएं
समाज के सामने आ रही है, लेकिन कुछ
समस्याएं ऐसी हैं जो प्राचीन काल से लेकर के
वर्तमान समय तक यथावत बनी हुई है। उन्हें में
से एक समस्या जो की एक सच्ची घटना पर
आधारित है, और जिसे मैंने बहुत ही सामने से
महसूस किया है; के बारे में लिखने का मेरा एक
छोटा सा प्रयास।

शराब तूने यह क्या किया !



शराब तूने यह क्या किया !

इंसान जहर पीकर मर जाता है मगर शराब उसे ना जीने देती है और ना मरने देती है।

कहते हैं कि आदमी पहले शराब पीता है और फिर शराब उसे पीती है जब तक वह बदहवास होकर मर ना जाए। शराब का ऐसा प्रभाव एक परिचित पर आंखों से देखा है।

गांव बमनपुरी (द्वाराहाट)-, तहसील “रानीखेत” जिला- अल्मोड़ा में बसा है। जिसमें 100 परिवार करीब 250 की आबादी में बसे थे। जिसमें ब्राह्मण, ठाकुर, वैश्य एवं हरिजन सभी जाति के लोग बसे थे। सभी में आपस में प्रेम वह भाईचारा था। कभी-कभार कुछ बातों को छोड़कर गांव में कभी झगड़ा फसाद या आपसी रंजिश दुश्मनी किसी में न थी। गांव में कोई भी काम होता तो सभी गांव वाले अपना ही काम समझ कर बढ़-चढ़कर पूरी तन्मयता के साथ उसे काम में भाग लेते और पूरा करते। चाहे पढ़ाई लिखाई हो, खेलकूद हो, सांस्कृतिक कार्यक्रम हो या नाटक मंचन का कार्यक्रम हो गांव ने इलाके में एक मिसाल कायम की थी।

गांव में एक विलक्षण प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे- नाम था , श्री मोहन चंद्र उपाध्याय उर्फ मुन्ना। पढ़ने लिखने में तेज -तर्रार , फुटबॉल और वॉलीबॉल के अच्छे खिलाड़ी। वॉलीबॉल खेल में तो वह एक तरफा पूरा कोर्ट कर करने की क्षमता रखते थे। संभवतः वह इंटरमीडिएट तक की शिक्षा हासिल किए थे आमतौर पर तब वहां हाई स्कूल या इंटर तक के ही स्कूल थे। इंटर तक की शिक्षा उसे समय बहुत मायने रखती थी। स्नातक या स्नातकोत्तरमहाविद्यालयतकब अल्मोड़ा या नैनीताल में ही थे। आम लोगों की आर्थिक हालात ठीक नहीं होने से वहां तक नहीं पहुंच पाते। मुन्ना जी स्वभाव के अच्छे हंसमुख, व्यवहार की मधुर थे। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद वह हल्द्वानी तहसील में , तहसीलदार के पद पर कार्यरत थे। वह अच्छी कद- काठी, गौरवर्ण व प्रभावशाली व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। वह लंबी मूंछें रखते थे जिसके वे विशेष तौर पर जाने जाते थे।

जानकारी के अनुसार मुन्ना जी की शादी हो चुकी थी। पत्नी साथ ही रहती थी। पत्नी सांवली, सलोनी, सुंदर होने के साथ-साथ एक संपन्न परिवार से ताल्लुक रखती थी। दांपत्य जीवन ठीक-ठाक चल रहा था। दोनों खुश थे कहते हैं कि पद, पैसा, पर्यावरण और संगत का आदमी पर बहुत प्रभाव पड़ता है। मुन्ना जी को शराब पीने की लत लग गई। अक्सर ऑफिस से शराब पीकर घर आते लड़खड़ा कर चलते और पत्नी से झगड़ा करते। जिसकी वजह से पति-पत्नी के भी मनमुटाव होने लगा, झगड़ा होने लगा और घर की शांति भंग हो गई।

शराब की लत ने उनकी पत्नी के मन में उनके प्रति नफरत, गुस्सा, भय, बेचैनी, घबराहट और अवसाद भर दिया। वह शराब छोड़ नहीं पा रहे थे और पत्नी को यह कतई गवारा नहीं था। एक म्यान में दो तलवारे कैसे समाती? हालात नहीं बहुत खतरनाक मोड़ ले लिया था। एक दिन मुन्ना जी कहीं गए थे। देर रात तक घर नहीं लौटे। उनके आने पर वैसे ही पत्नी खुश नहीं होती उनकी पत्नी ने निराश और गुस्से में बदहवास होकर पूरा शृंगार कर साड़ी पहनकर, दरवाजा भिड़ा कर कमरे में पंखे की खूंटी से रस्सी के सहारे लटक कर अपनी, जीवन लीला ही समाप्त कर ली। मुन्ना जी घर नहीं आए थे। सुबहहुई और दिन चढ़ आया। पड़ोसियों ने देखा कि बगल वालों की वहां कोई जहर पहल नहीं हो रही, दरवाजे नहीं खुले हैं। तो पड़ोसियों ने आवाज दी, उत्तर नहीं मिला। कुछ संदेह हुआ तो दरवाजों को धक्का दिया। जैसे ही दरवाजा खुला भीतर देखकर सभी आवाक रह गए ! और मुंह से चीख निकल गई। देखते हैं कि उपाध्याय जी की पत्नी ने आत्महत्या कर ली ! पूरी तहसील क्वार्टर में हाहाकार मच गया। और और लोगों की भीड़ जमा हो गई। इस हृदय विधायक दुर्घटना से ससुराली बहुत दुखी हुए और मुन्ना जी के प्रति कानूनी कार्रवाई की। परिणाम स्वरूप उनकी नौकरी चली गई और वह एकदम पैदल और बेबस हो गए।

जिंदगी गमगीन और सूनी हो गई। दुष्ट शराब ने उनकी अच्छी खासी जिंदगी बर्बाद कर दी। पत्नी दुखी होकर चल दी । अब भी करें भी तो क्या करें। गम और बर्बादी दोनों जिंदगी को जकड़े हुए थे। इन हालातो में शराब उनके और करीब आ गई; जैसे- कह रही हो मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं छोड़ूंगी। उपाध्याय जी संभवत दो भाई ही थे। उनके बड़े भाई आनंद इलाहाबाद बैंक में कर्मचारी थे और गांव में घर पर वृद्ध माता-पिता रहते थे जो दुखी और चिंतित थे। आनंद जी ने काफी कोशिश के बाद उनकी नौकरी बॉर्डर सिव्योरिटी फोर्स(बी० एस० एफ०) में एक सिविल क्लर्क के रूप में लगवा दी थी। और उनकी शादी एक गरीब परिवार की लड़की से करवा दी। लड़की चौखुटिया की रहने वाली थी। घर परिवार ठीक ही चल रहा था मुन्ना जी चंपावत बॉर्डर में कार्यरत थे। अभी भी वे घर पर काम आते और जब छुट्टी आते तो शराब पीकर आते। घर पर झगड़ा करते और उधम मचाते। पत्नी परेशान रहने लगी तब इनके दो बच्चे हो गए थे। इनके घर पर काम आने की शिकायत पर इनका तबादला के०आर०सी० रानीखेत बमुश्किल करवाया गया। कुछ समय तक हालात ठीक रहे परंतु कुछ दिन बाद गाड़ी फिर वही पुराने ढर्रे पर आ गई। अब तो मुन्ना जी एक रूपया भी

घर पर नहीं देते और सारी तनख्वाह, शराब में खर्च कर देते। पत्नी के लिए दो बच्चों का पालन पोषण एवं घर का खर्चा चलाना बहुत मुश्किल हो गया।

उन दिनों के० आर०सी० में ,गांव के ही एक सज्जन लेखा अधिकारी के पद पर कार्यरत थे। परेशान पत्नी उनके पास गई और अपना दुखड़ा बताया। तब उन्होंने उनसे मुन्ना जी की तनख्वाह से एक निश्चित धनराशि कटवा कर उनके खाते में डलवाने के लिए एक बड़े अधिकारी को पत्र लिखने को कहा। इस प्रक्रिया के तहत मुन्ना जी की तनख्वाह से एक निश्चित राशि कट कर पत्नी के खाते में आने लगी और उनका खर्चा चलने लगा।

इस पर उन्होंने कार्यालय जाकर एतराज किया। शराबी मुन्ना भाई कई दिनों तक ऑफिस नहीं जाते, फिर भी अधिकारी जी उनके बच्चों पर तरस खाकर वेतन बनवा दे रहे थे। इस पर अधिकारी जी को भी कई बातों का सामना करना पड़ा। जब मुन्ना जी के रवैये में कोई बदलाव नहीं आया तो उनको नोटिस दिया गया कि अमुक तारीख तक यदि नौकरी में उपस्थित नहीं हुई तो उनकी सेवा समाप्त कर दी जाएगी। लेकिन इसके बावजूद भी वह नौकरी पर नहीं गए तो उनकी नौकरी समाप्त कर दी गई।

पत्नी के लिए अब बड़ी ही समस्या हो गई वह खेती बाड़ी का काम करती, रूपों के अभाव में मुन्ना जी ने घर के अच्छे बर्तन और घर का अनाज बेचना शुरू कर दिया। इस पर पत्नी ने नाराज होकर उनका घर पर रहना और आना बंद कर दिया वह घर पर पत्थर इकट्ठे किए रहती और जब मुन्ना जी नीचे सड़क से घर की तरफ रुख करते तो ऊपर से पत्थर बरसाती और उनके सिर में कई बार चोट लगती। वे लहलुहान होते, रोटी चिल्लाते और गांव में लोगों के घर पहुंच कर अपनी आप बीती सुनते और पत्नी की शिकायतें करते। वह लोगों से खाना मांगते, शरण मांगते। शुरू शुरू में लोगों ने दया कर उन्हें खाना पानी दिया। आखिर कब तक दया दिखाई जाती धीरे-धीरे लोगों ने उनकी याचना अनसुनी कर दी। यह कहकर कि जब तुम शराब के पीछे पत्नी, बच्चों और अपना घर नहीं संभाल पाए तो कौन फालतू में और कब तक खाना और शरण देगा। तुम शराबी अपनी बर्बादी के खुद जिम्मेदार हो, तुम भुगतो! असहाय मुन्ना क्या करते? उनका जीना और मरना दोनों ही मुश्किल हो गया।

जब गांव वालों ने दुत्कार दिया तो मुन्ना जी ने गांव के एक छोर पर बसे शिल्पकारों (हरिजन) की बस्ती में जाना शुरू कर दिया। मरता क्या न करता? वे रात में बस्ती में जाते और लोगों से खाना- पानी और शरण देने की गुहार लगाते। इंसानियत के नाते लोग तरस खाकर सकुचाते हुए उनका खाना पानी और शरण दे देते। भूखी मुन्ना अपनी भूख शांत करते और प्यास बुझाते रात में वही रह लेते। फिर सुबह उठकर चल देते। परंतु यह भी ज्यादा दिन तक नहीं चला। लोक लाज के डर से हरिजनों ने भी खाना और शरण देने से मना कर दिया। और मुन्ना जी शरणहीन और हर घर से वंचित हो गए। लाचार मुन्ना जी ने अब बाजार में दुकानों के पास, बस अड्डे के पास अपना ठिकाना बनाना शुरू कर दिया। और जो भी जान पहचान का या साज्जन दिखता उससे रुपए मांगना शुरू कर दिया। रोनी सूरत बनाकर, गिड़गिड़ा कर मांगते- “कुछ खाने को दे दो मैं भूखा मर रहा हूं।” यही करूण स्वरों का उच्चारण करते। इस प्रकार जो भी उन्हें मिल पाता, चाय पानी पी लेते खाना खा लेते। और इस प्रकार मुन्ना जी का जीवन भिखारी के रूप में दरिद्रता से गुजर रहा था। वे जैसे- तैसे जीवन का बोझ ढो रहे थे। लेकिन धीरे-धीरे लोगों ने उन पर ध्यान देना छोड़ दिया।

अभी तो मुन्ना जी को बहुत कुछ भुगतना था। जैसे- तैसे दिन गुजर रहे थे एक दिन वह कमजोरी बश नशे की हालत में थे। और एक गाड़ी से टकरा गए। गाड़ी के नीचे उनके दोनों पांव आ गये और दोनों पैरों में फैक्चर हो गया।

लोगों ने उन्हें अस्पताल पहुंचाया और चंदा इकट्ठा कर इलाज करवाया। लेकिन बावजूद इसके वे दोनों पैरों पर चलने लायक नहीं रहे , उन्हें बैसाखी के सहारे चलना पड़ा। उनकी दयनीय हालत देखकर लोगों ने उनकी पत्नी से उन्हें घर ले जाकर सेवा करने का आग्रह किया। पत्नी के दिल में उनके प्रति इतनी नफरत थी कि उनकी दयनीय हालात पर भी उन्हें तरस नहीं आया। परंतु वह लोगों की बात नहीं टाल सकी और मुन्ना जी को घर ले लाई। वह बेचारी भी बड़ी गरीबी में दिन कट रही थी । जैसे- तैसे बच्चों को पाल रही थी पत्नी पति के बीच बोलचाल बंद थी। फिर भी यथा संभव सेवा कर रही थी। खेती-बाड़ी तो कर रही थी लेकिन पाल्ले में पैसे नहीं थे। बच्चों की पढ़ाई लिखाई, फीस, समान खरीदने आदि के लिए पैसे चाहिए थे।

उपाध्याय जी के माता-पिता गुजर गए थे। बड़े भाई भी अब नहीं रहे और उनके बच्चे भी बाहर ही रहते। गांव की तरफ रुख काम ही करते। अबघर और खेत मुन्ना जी के ही नाम थे। धीरे-धीरे पत्नी ने व्यवहार बदल दिया और विश्वास में लेकर बोलचाल शुरू कर दी। अच्छी सेवा करनी शुरू कर दी और बच्चे भी आदर करने लगे, पापा -पापा कहकर पुकारते जिस घर का माहौल अच्छा हो गया। मुन्ना जी काफी खुश थे; सोचने लगी कि मैं कितना भाग्यशाली हूं जो मुझे ऐसी सुंदर पत्नी और प्यारे बच्चे मिले। पत्नी कितनी अच्छी और नेक दिल वाली है जिसने उन्हें माफ कर दिया। मुन्ना जी का जीवन अब ठीक प्रकार से चल रहा था। एक दिन पत्नी ने बड़े प्यार से कहा कि अब बच्चे बड़े हो रहे हैं उनकी पढ़ाई लिखाई का खर्चा बढ़ रहा है। खेती बाड़ी से बस भोजन की व्यवस्था भर हो रही है। अधिकांश खाद्य आदि सामग्री तो बाजार से ही लेनी पड़ती है मकान भी जर्जर हो गया है खेती करने से भी कोई विशेष फायदा नहीं हो रहा है। घर का खर्चा कैसे चलेगा ? आपकी हालत भी अब ठीक नहीं कल बच्चे ही घर चलाएंगे। मैं आपसे विनती करती हूं कि मकान और खेत मेरे नाम कर दो। कुछ खेत बेचकर मकान की मरम्मत करवा देंगे और बाकी पैसा बैंक खाते में जमा कर देंगे और जरूरत पड़ने पर निकालते रहेंगे बच्चों की पढ़ाई -लिखाई घर के खर्चे आदि के लिए कुछ रुपया पास में रख लेंगे। परिस्थिति के अनुसार मुन्ना जी ने हामी भर दी। मकान, खेत के नाम हो गये। रुपए पत्नी ने अपने पास रख लिए। कुछ समय तक मुन्ना जी की सेवा जारी रही लेकिन उसके बाद उनका घर से निकाल दिया गया और कहा गया कि अब तुम्हारा घर पर कोई अधिकार नहीं है। एक शराबी एवं अपाहिज भिखारी को हम क्यों रखें? तुमने हमारे लिए किया ही क्या है?

मुन्ना जी फिर घर से बेघर हो गए और सड़क पर आ गए। रोये भी तो कौन सुनने वाला? बैसाखी के ही सहारे कयामत की जिंदगी जीने को मजबूर हो गए थे। लोगों से पेट भरने को रुपया मांगते। मिल जाता तो कुछ खा पी लेते और नहीं मिलता तो भूखे ही सड़कों दुकानों के पास सो जाते। ना सोने को कुछ बचा था ना ही खोने को कुछ बचा था। जर्जर या कमजोर डोर से एक पतंग कब तक उड़ती? आखिर बैसाखी के सहारे एक भूखे -प्यासे अपाहिज की जिंदगी कितनी चलती?

अन्तत एक दिन मुन्ना जी सड़क के किनारे मृत पाए गए और इस दुनिया को सदा के लिए अलविदा कह गए। वहां पर लोगों की भीड़ थी। लेकिन उनके लिए आंसू बहाने वाला कोई भी न था। लोग बातें कर रहे थे , संवेदना प्रकट कर रहे थे और कुछ लोग तानें भी कस रहे थे। जितनी मुख उतनी बातें। कोई कहता - कितना अच्छा लड़का था। कोई कहता पढ़ाई में अव्वल था ,खेलकूद में माहिर कितना सुंदर चेहरा था। कोई कहताक कद-काठी अच्छी , लंबे कद का तहसीलदार लंबी मूंछें अच्छी खासी नौकरी मान सम्मान वाली कोई कहे अच्छी पत्नी, प्यारे बच्चे दो मंजिला मकान नहीं भोग पाया रे, यह आदमी सिर्फ शराब की लत की वजह से शराब के खातिर नौकरी घर पत्नी सब छोड़कर भिखारी बन गया, अपाहिज बन गया पर शराब नहीं छोड़ पाया।

अच्छा खासा स्वस्थ तन मुई शराब ने कंकाल कर दिया। शराब तूने यह क्या कर दिया न जीने दिया ना मरने दिया कमाल कर दिया।

आज मैं लगभग 76 के पास पहुंच चुका हूं और यह कहानी है जब मैं युवावस्था में था तब की। जिंदगी के इस दौर में मैंने देखा कि नशे की यह समस्या उस समय से लेकर अभी तक जस की तस हमारे समाज में विराजमान है। लेकिन उसे समय लोग फिर भी इसे थकावट दूर करने या फिर कभी कभार विवाह समारोह आदि में ही प्रयोग करते थे। बस समाज की कुछ एक लोग ही इसकी लत के बहुत बुरे शिकार हो जाते थे। लेकिन वर्तमान समय में इस समस्या ने अपना और भी विकट रूप धारण कर लिया है। पहले यदि लोगों के पास पैसा नहीं होता था तो भी कर्ज लेते थे या अपनी ही जमीन, जायदाद घर आदि बेचते थे। लेकिन वर्तमान समय में शराब को एक बुरी लत के तौर पर नहीं देखी जा रही बल्कि शौक के तौर पर देखा जा रहा है। आज बहुत 17 -18 वर्ष की आयु से ही बच्चे नशे के शिकार होते जा रहे हैं, एक बात यह भी है कि पहले के समय में शराब और चरस के अतिरिक्त अन्य नशे का साधन उपलब्ध नहीं होता था और उनकी पहुंच भी अधिकतर समाज के उच्च वर्गों तक ही हो पाती थी। किंतु आज के समय में नशे की नये- नये साधन उपलब्ध है। सर आपके अतिरिक्त आज समाज में इतनी नशीली दवाएं इंजेक्शन उपलब्ध है जो हमारे बच्चों के भविष्य को खोखला कर रहे हैं और उन्हें गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं।

केवल लड़के ही नहीं लड़कियां भी आज नशे की ओर तेजी से अपने कदम बढ़ा रही है मानो नशा करना कोई बुरी बात नहीं बल्कि वर्तमान समाज की मांग है। हम भारत के पुत्र भारतवासी, न जाने आज कौन सी राह पर आगे बढ़ रहे हैं। विश्व गुरु कहलाने वाले ,आज हम नशे के आगे बेबश होते जा रहे हैं। यह नशा आज के युवकों को मानसिक और शारीरिक रूप से खोखला कर रहा है। आजकल बड़ी- बड़ी यूनिवर्सिटी से लेकर छोटे कॉलेजों तक यह नशे की समस्या आम समस्या हो गई है। सरकार इसके लिए कदम भी उठाती है लेकिन पूरी तन्मयता से शायद कार्य नहीं कर पाती। क्योंकि सरकार को इससे अच्छा खासा राजस्व प्राप्त हो जाता है। अब बात यह आती है कि इस समस्या से छुटकारा पाएं तो आंखें कैसे पाएं। भारत को विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त है और यह दर्जा ऐसे ही इसे नहीं मिला है आप जरूर है हम कई

हृद तक पश्चात सभ्यता को नजर अंदाज करें और अपनी वेदों की ओर लौटे। कहीं ना कहीं मानसिकता में बदलाव होगा तो आदतों में भी बदलाव होगा।

आज हम अपनी संस्कृति को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति की ओर दौड़े जा रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे हैं और खासतौर पर बच्चों में तो उसका फैशन सा हो गया है। इसलिए कोई भी बुराई से लड़ने के लिए हमें सबसे पहले मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ होना। जब हम मानसिक रूप से स्वस्थ होंगे तो ही हम समाज से ऐसी गंदगी को मिटा पाएंगे। हमें हमारे घर में स्कूलों में विद्यालयों में महाविद्यालय में ज्यादा से ज्यादा हमारी भारतीय संस्कृति को अपनाना होगा। छात्रों को प्रेरित करने के लिए नए-नए तरीके ढूंढने होंगे। और एक स्वस्थ मानसिकता का विकास करना होगा। शराब की बिक्री और खरीद के लिए भी कुछ नियम बनाने होंगे तो शायद कुछ हद तक हम इस समस्या से निजात पा सकेंगे।

मैं शराब को विष से भी भयंकर मानता हूं। जब कभी मौका मिलता है या अपने आसपास कोई ऐसी घटना घटित होते हुए देखता हूं, मेरा मन द्रवित हो जाता है और उसे व्यक्ति से जो शराब की वजह से बर्बाद हो रहा है तो कुछ कह नहीं पता लेकिन हां अपने मन की वेदना और विचारों को कागज कलम से अवश्य लिखता हूं। शराब के ऊपर ही मैंने कुछ शब्द और लिखे हैं। की किस तरह से यह शराब इंसान को, इंसान से हैवन और कंगाल बना देती है।

शराब विष से भी भयंकर –

आदमी जब शराब पीता
मस्त मदहोश होकर जीता
बिल्कुल आजाद, ना टोका टोकी ना कोई चिंता,
समझो शहंशाह, जिसने बड़े बड़ों को जीता।
होकर मगरननशे में चूर,
मन में पाले यह फितूर
जहां तक देखे वह दूर-दूर
उसके जैसा कोई नहीं, कहता उसका गुरुर।
वह बहुत बड़ा है और सब छोटे हैं,
वही है, सच्चा- ईमानदार बाकी सब खोटे हैं।
वह मालिक है खेत, खलिहान, दुकान मकानों का
सड़क पर चलती गाड़ियों का, काम पर लगे इंसानों का।

वह बैठा है ऊपर सुंदर सुसज्जित कुर्सी पर,
आगे बैठे उसके जो , खुश करें उसे चापलूसी कर
वह महान है , इंसान आलीशान है।
सब पर चलता उसका फरमान है,
उसके सामने खोल नहीं किसी की जुबान है,
हाथों में उसके सब की जान है।

अब नशा हो जाता उसका काफूर,
सपनें हो जाते पल-पल में चूर
पड़ा रहता घास- फूस झाड़ी या गंदी नाली में
तन्हा, सायं सायं करती रात्रि की पाली में।

कहां, कैसे, क्यों आदि सवाल होंगे घर पर,
सोचो क्या जवाब देगा? कैसे चलती अगर -मगर
शराब बना देता ऐसा जीवन क्रम
घर बाहर लोग कहते बेहरम बेशर्म
शराबी गिरता जाता मुश्किलों में गिरता जाता,
जिंदगी और मौत के बीच फिरता जाता
अंत में मौत जीत जाती जिंदगी हर जाती
अनमोल जिंदगी को जीते जी मर जाती।

सही परख कर एक एक बात का गये भगवान बुद्ध
जो बात बड़ी है और सोलह आने हैं शुद्ध,
इंसान पहले शराब पीता, फिर शराब उसे पीती
कोई न सुन उसकी शराब से जो उसकी उसे पर बीती।
कहते हैं शराब विष से भी भयंकर ,
विष तो तो लोकहितार्थ पी गए भोलेनाथशंकर
शराबी तो उनसे भी बड़ा न काटा लगे ना कंकर
जिंदगी दांव पर लगा दे पड़ा रहे कहीं भी जमीन पर।

मैं शराब के बारे में यह सारी बातें यह सारी अनुभव शायद इसलिए कह पा रहा हूं ,
क्योंकि मैं करीब से इसके दुष्प्रभाव देखे हैं। एक ही नहीं कई ऐसे वाक्ये मैंने देखे हैं
जिनकी वजह से अच्छे-अच्छे घर और बच्चे बर्बाद हो गए हैं। इसलिए मेरी समझ में नशा
वर्तमान समय की एक बहुत ही बड़ी गंभीर समस्या बना है।

जो वर्तमान ही नहीं प्राचीन काल से अभी तक हमारे समाज में व्याप्त है और इसे रोकने का कोई अचूक और असरदार उपाय हमें नहीं मिल रहा है। मैं इस कहानी और कविता के माध्यम से बस लोगों को यही संदेश देना चाहता हूं कि यह कहानी रूप में लिखा मेरा लेख एकदम सत्य घटना पर मेरे आंखों के सामने घटित हुआ है उसे समय शायद मेरी उम्र 17 -18 वर्ष की होगी और उसे घटना के बाद से तथा आसपास कुछ और ऐसी छोटी-मोटी घटनाओं को देखने के बाद मैंने अपने जीवन में एक प्रण लिया कि मैं कभी भी नशा व जुए आदि को हाथ नहीं लगाऊंगा चाहे कुछ भी हो जाए मैं आजीवन इन बुराइयों से दूर रहूंगा, दूरी बनाए रहूंगा।

और आखरी में अपनी युवा वर्ग को यही संदेश देता हूं की हमारे इतिहास की ओर झांको उन महापुरुषों को देखो- स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, गौतमबुद्ध और भी न जाने कितने ऐसे महापुरुष हैं जिनकी वजह से आज हमारा इतिहास गौरवमय है। हमें बस इतना ही करना है कि उसे गौरव में इतिहास को और समृद्ध बनाते चलें। और अपने समाज से नशे जैसी इस बीमारी इस गंदगी को दूर भगाने का प्रण ले।

- जीवन लाल साह।



लेखक परिचय

नाम – जीवन लाल साह। (पंतनगर यूनिवर्सिटी से
सेवानिवृत्त)

ग्राम - जवाहर नगर तल्ला

पोस्ट आफिस - डेरी फार्म नगला

जिला - उधम सिंह नगर उत्तराखंड





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ... **जीवनलाल साह पंतनगर** ...जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों** को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...